बातां री फूलवाड़ी समस्त भागों का परिचय

*डॉ. गोकुल चन्द सैनी

'बातां री फूलवाड़ी' (भाग–1)

'बातां री फुलवाड़ी' (भाग–1) विजयदांन देथा द्वारा मूल राजस्थानी भाषा में लिखा गया है। फुलवाड़ी के इस भाग में 72 छोटी–बड़ी बातें और एक लोक उपन्यास है जो 'तीडौ राव" नाम से प्रसिद्ध है। इसमें प्रेम, हास्य और करूणा जैसे विविध विषयों को लिया गया है। देथा जी ने अपने गांव बोरून्दा से ही इन बातों को एकत्रित किया। इन बातों के लेखन में देथा जी के मित्र जगराम सिंह जी का बड़ा सहयोग रहा, जिन्होंने देथा जी को नित–नई बातें सुनाई। इन बातों को सुनने के बाद ही देथा जी ने इनमें कला और कल्पना को भरा जो ' बातां री फुलवाड़ी (भाग–1) के रूप में पाठकों के सम्मुख आई ।

2. बातां री फुलवाड़ी' भाग —–2

'बातां री फुलवाड़ी' भाग–2 को भी विजयदांन देथा ने मूल राजस्थानी भाषा में लिखा है। इस भाग की कथाओं को देथा जी ने बड़े बुर्जगों व औरतों के मुख से सुनकर अपनी कल्पना के माध्यम से लिखा। ये कथाएं भी राजस्थानी समाज में पीढ़ियों से चली आ रही हैं और आज भी ये कथाएं लोगों के कण्ठों में विराजमान हैं ।

3. बाता री फुलवाड़ी भाग —–3

विजयदांन देथा द्वारा लिखित इस भाग में तेरह कथाएं और एक लघु उपन्यास है, जो मूलतः राजस्थानी भाषा में "आठ राजकवंर' के नाम से प्रसिद्ध है। इस भाग की कथाओं को राजस्थानी लोक कथाओं के पुनसर्जन की गणना में देखा जा सकता है। आठ राजकवंर' उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है किसी एक देश का राजा अपनी एक रानी पर बहुत प्रसन्न था। जीवन की धारा अपनी सहज गति से चल रही थी। रानी के महल में एक आश्रय–कोने में एक चिड़े और चिड़ी ने अंडे दिये। अंडों में चहचहाते बच्चे निकले। कुछ बड़े हुए और अचानक एक दिन उनकी मां उन्हें असार संसार में छोड़कर चल बसी। चिड़े ने दूसरा घर बना लिया अर्थात उसने दूसरा संपर्क साध लिया। इस सौतेली मां ने पहला काम यह किया कि उन सभी बच्चों को तितर–बितर कर विनष्ट कर दिया। रानी अपने ही महल में इस सारी घटना को पूर्ण आत्मचेतना के साथ देख रही थी। अनायास उसका माथा ठनका कि यदि वह भी कभी इस संसार से अनायास असीम शून्य में समा गई तो उसके एक, दो या तीन पुत्रों का क्या होगा। रानी ने उसी रात्री को शयन कक्ष में राजा से ठीक यही प्रश्न पूछ लिया। राजा ने पूर्ण श्वास के साथ रानी को आश्वासन दिया कि कहीं पशु–पक्षियों का व्यवहार मनुष्य अंगीकार कर सकता है ? रानी की चिन्ता व्यर्थ है। क्या वह इस तरह अपनी रानी की स्नेह–गरिमा को कभी भुला सकता है। ऐसी सुन्दर, निष्कपट और सहज रानी क्या किसी अभागे राजा को मिल सकती है। इन्हीं विश्वास और आश्वासन की थपथपी में उस रात्री का काल बीत गया। लेकिन रात्री की उस कालिमा में कुछ और ही दबा था। रानी को अपने निस्सहाय पुत्रों को छोड़कर निकट भविष्य में ही मृत्यु का अलिंगन करना था। उसके पुत्र या पुत्रों का भविष्य चिड़े–चिड़ी के बच्चों से बहुत कुछ पृथक नहीं

था।

4. बातां री फुलवाड़ी भाग–4 व 5

विजयदांन देथा द्वारा लिखित 'बातां री फूलवाड़ी' भाग 4 व 5 को भी राजस्थानी लोक कथाओं के पुनसर्जन की गणना में देखा जा सकता है। इन भागों में लिखित कथाओं में देथा जी ने प्राचीन राजस्थानी समाज का यथार्थ जीवन प्रस्तुत किया है, जिसमें राजस्थान का लोकजीवन, लोक–विश्वास, लोक प्रथा, लोक देवता, लोक कलाएं, लोकानुरंजन, लोकव्यसन, राजस्थानी समाज में आर्थिक परिवेश और आम आदमी, समाज में वर्ग वैमनस्य, आर्थिक शोषण का कुचक्र व महाजनी व्यवस्था के षडयंत्र आदि को देखा जा सकता बातां री फलवाड़ी' के ये भाग भी देथा जी ने मूल राजस्थानी भाषा में लिखे हैं। इन भागों में लिखित बातों में राजस्थानी भाषा की प्रज्जवलता, उसकी विशिष्टता और उसका ओज धीरे–धीरे विकसित हुआ है जो बातां री फुलवाड़ी व राजस्थानी भाषा के लिए बड़े ही गौरव की बात है ।

5. बातां री फुलवाज़ी भाग––6

इस भाग में विजयदांन देथा का राजस्थानी भाषा में मां रो बदलो भाग–1 लोक उपन्यास है, जिसका सम्बन्ध 'डाढ़ाला सूर री वारता' से है। उपन्यास का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है कि एक राजकुमार सूअर का शिकार करता है। सूअर राजकुमार को अपने छोटे से राज्य की सीमा से अन्य राज्य की सीमा में पहुंचा देता है जहां राजकुमार के सामने एक युवती आ जाती है। यह युवती साधारण नहीं है। अपने खेत की रखवाली के साथ ही शरणागत को शरण देनेवाली, अपने मानवीय सिद्धान्तों के लिए लड़–मरनेवाली असाधारण युवती है। राजकूमार के दो सैनिकों को 'गोफण' के पत्थरों से धाराशायी कर देने के बाद राजकुमार के मन को भय से प्रकंपित कर देती है। मूल कथा का बीज यहीं से अंकुरित होता है। अपराधिनी युवती को सजा देने की दृष्टि से राजकुमार उससे विवाह स्वीकार कर लेता है। युवती के परिवार वालों के लिए हर्ष का वारापार नहीं रहता। कहां साधारण परिवार और कहां राजकुमार का राजपरिवार! इसके बाद वह राजकुमार उस युवती को "दुहाग" देकर अपने राज्य में चला जाता है। युवती ने अपने आत्मगौरव की रक्षा की भावना से कहा कि वह एक दिन उसी से पुत्र प्राप्त करके पति से, अवश्य बदला लेगी। इस स्थल पर युवती को यदि कोई आवश्यकता थी तो उस सत्य और सिद्धान्त की जो उसके निश्चय को यथार्थ स्वरूप दे सके। इस मनोवैज्ञानिक स्थिति को पूर्ण करती है–– पागल मौसी। गांव की यह वृद्धा मौसी अपनी जीवनानुभूति से ही कुछ ऐसे चारित्रिक गुणों का संगठन कर लेती है जो रुढ़िगत समाज की खोखली जड़ों को झकझोर देने वाले और सामाजिक क्रांति के विचारों के नेतृत्व का भार लेने लगते हैं।

पागल–मौसी की मातृत्व के प्रति धारणा और युवती में अपने विवाह की घटना के प्रति प्रतिहिंसा के भाव का परिणाम एक ही होना था अर्थात युवती गर्भ धारण करे, मां बने। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक दिन वे दोनों अपने गांव को छोड़कर, गूजरी के वेष में राजकुमार के देश के लिए चल निकलती हैं। राजकुमार अब तक अपने पिता की हत्या का पाप ओढ़कर राजा बन गया था और राजकीय ढांचे में चापलूसी और तारीफों की फूसलाहट में जीवन बिता रहा था। गूजरी के सौन्दर्य की चर्चाएं सुनकर राजा का मन उसे प्राप्त करने के लिए ललक उठता है और येन–केन–प्रकारेण उसे हथियाने के षडयंत्र में उलझ जाता है। गूजरी का लक्ष्य राजा से गर्भ धारण करने के बाद एक दिन राजा के देश से वह परिवार जिस प्रकार अनायास आया था, उसी प्रकार अपने गांव लौट जाता है। इस प्रकार विजयदांन देथा ने बातां री फुलवाड़ी भाग–6 में 'मां रौ बदल्झों' भाग'–1 लोक उपन्यास में इतनी ही कहानी को प्रस्तुत किया है।

6. बातां री फुलवाड़ी भाय––7

बातां री फुलवाड़ी के इस भाग में विजयदांन देथा ने मां रौ बदक्को' लोक उपन्यास के दूसरे भाग की कथावस्तु को प्रस्तुत किया है। इसकी कथावस्तु के अनुसार गूजरी ने पुत्र को जन्म दिया, उसकी आशा फली। लेकिन बालक सामान्य नहीं रहा। किन्तु समाज के लिए नामांकित पिताविहिन पुत्र और पतिविहिना स्त्री के पुत्र का कौन सम्मान करता। इस पुत्र ने पागल मौसी का दूध पिया और माँ के दृढ़ निश्चय का आंचल छुआ था। अतः उसके बाल–अपराधों का कहां ठिकाना था? घड़े फोड़ देना, पनिहारियों के बीच में घोड़े दौड़ा देना, गांव में लड़कों से लड़ते–भिड़ते रहना और एकाकी जीवन व्यतीत करने का अभिशाप उसे भोगना ही पड़ा। लेकिन जिस दिन उसे ज्ञात हुआ कि उसके जीवन के इस अभिशाप का कारण क्या है। वह उसी दिन राजा के देश और राज्य की व्यवस्था का पूरा खोखलापन राजा के सामने खोलकर रख देता है।कथा की प्रमुख घटना में पात्रों के कार्य का यही संक्षिप्त लेखा–जोखा है। लेकिन पूर्ण कथ। एक सामन्ती व्यवस्था का व्यंग्यपूर्ण महाकाव्य है। राजा के नगर में पहुंचने के बाद रूपवंत राजकुमार ऐसी घटनाओं का सूत्रधार बन जाता है जो राजा की नन्याय–योग्यता और मूर्खता में उदाहरणों को चरम सीमा तक पहुंचा देते हैं। राजा की मूर्खता का चरम एकाकी व्यक्तित्व में निहित नहीं होता अपितु उसकी मूर्खता और मूढ़ता का चरमोत्कर्ष तो राजदरबारियों की समग्र–मूर्खता के साथ ही पूर्णत्व को प्राप्त करता है। इधर पागल मौसी व गूजरी दोनों माताओं का समवेत स्वर ही बादल के रूप में उत्पन्न हुआ। उसमें गूजरी की दृढ़ता और पागल मौसी की चतुराई का संगम हुआ। उसने मां के प्रतिशोध की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया और पागल–मौसी की मां की सृष्टि' की कल्पना को साकार किया। बादल ने दोनों की उस मानवतापूर्ण मान्यता को प्रतिस्थापित किया जो अनाचारी और दुष्ट राज सत्ता के दुर्गधंपूर्ण समाज को समाप्त करने के लिए कृतसंकल्प था। बादल वस्तुतः व्यष्टि और समष्टि का एक संगम सिद्ध हुआ। इस ब्रकार इस उपन्यास की कथावस्तु बादल के माध्यम से सामन्ती व्यवस्था का खोखलापन प्रस्तुत करने वाली है।

7. बातां री फझुलवाड़ी' भाग––8

विजयदांन देथा ने फुलवाड़ी के इस भाग में बारह लोक कथाओं को लिखा है। जो इस प्रकार हैं – 1. पग री जूती 2. नांव रौ म्यांनौ 3. पाप रौ बाप 4. फेफ रा फूल 5. काठ रौ हंस 6. सपना री राजकवरी 7. थाटवी राजकंवर 8. चौबोली 9. गौगा रौ जीमण 10. लीलगर री बेटी 11. गधा रै खोकिये 12. आसकरण।

फुलवाड़ी के इस संग्रह में मुख्यततया–पांच प्रकार की कथायें हैं। प्रथम प्रकार की कथा 'पग री जूती' है – जिसमें एक हत्यारे का चित्रण है – जो स्वयं अत्यंत चतुराई से हत्या को अन्य लोगों के सिर पर डालने का प्रयत्न करता है। इस कथा का नायक अपने विभिन्न नकारात्मक अथवा असामाजिक कत्यों के द्वारा अपनी चतुराई को स्थापित करता है। दूसरे प्रकार की कथाओं में सांसारिक मनुष्य अथवा कथा नायक अलौकिक तत्वों की सहायता और दानवीय शक्तियों के. विरूद्ध संघर्ष करता हुआ अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

तीसरे प्रकार की कथा में नायक अपनी जीवन यात्रा को अधूरी छोड़ कर विदा हो जाता है। एक शापित जीवन का शापित अन्त। चौथे प्रकार की कथा में चार कथाओं को एक प्रसंगपूर्ण कथा के साथ पिरोया गया है। ये चारों कथायें एक–एक प्रश्न को जन्म देती है और उनके प्रत्युत्तर के साथ कहानी का लक्ष्य निकट आता–जाता है। इसी संग्रह में दो छोटी कथायें ऐसी भी हैं– जिनमें एक तो मनुष्य के व्यक्तिवाचक नामों की विषमता को प्रकट करती है और दूसरी लोभ को पाप का पिता घोषित करती है। ये कथायें प्रदेश के नामकरण विधान और लोभ के परिणामों के तथ्य को संकेतित करती हैं। कथानकों के इन विभेदों की गहराई में एक सूत्र सभी कथाओं में चलता है और वह व सूत्र है– मनुष्य चाहे कितना ही कठिन लक्ष्य अपने सामने क्यों न व निर्धारित कर ले– यदि उसमें लक्ष्य को प्राप्त

करने के प्रति एकाग्र चिन्ता और कार्य करते रहने की अदम्य लालसा बनी रहती है तो वह निश्चय ही अपनी मंजिल पर पहुंच जाता है। किन्तु अपने लक्ष्य की प्राप्ति सहज नहीं होती–उसके लिए अनेकानेक समस्याओं को सुलझाना व पड़ता है–– सहायक–शक्तियों का सहारा लेना पड़ता है और विरोधी सत्ताओं का दमन करना पड़ता है। इन कथाओं में घटनात्मक तारतम्य ही प्रमुख रहता है। पात्रों या चरित्रों के मानसिक उद्वेलन, उनकी मानसिक क्रिया–प्रतिक्रिया अथवा उनके मानसिक द्वंद का चित्रण नहीं होता। नायक अथवा अन्य पात्रों के क्रिया–कलाप एवं घटनाओं के बीच में कार्य करने की विधि का मानों कथा के पूर्व ही निर्णय ले लिया गया है। इसी प्रकार कथा का अंत भी लगभग पूर्व–संयोजित होता है। पात्रों ओर घटनाओं के इस सम्बन्ध के कारण इन कथाओं को सौंदर्यानुभूति और आत्मतुष्टि के लिए केवल कुतुहल, रचना–प्रसूत जिज्ञासा और वर्णनात्मक सौंदर्य के सहारे ही अपना अस्तित्व बनाये रखना पड़ता है। लेकिन घटनात्मक या सुनिश्चित चरित्रात्मक स्थितियों के उपरान्त भी कला का स्वरूप जितना सहज दिखाई देता है– उतना द सहज नहीं होता। क्योंकि कथा के स्थूल पात्र व घटनाओं का क्रम स्वयं सामूहिक मानस कं अवचेतन अथवा अचेतन अवस्था के प्रतीक बनकर कथा में प्रयुक्त होते हैं। इन प्रतीकों की गहराई को संमवतया समाज का एक सामान्य व्यक्ति अपने–आप समझने–समझाने में असमर्थ है – लेकिन कथाओं के प्रति उसका आग्रह और अलौकिक तत्वों की तात्विक स्थापनाओं में उसके अविचल विश्वास के कारण ये प्रतीक ठीक वही प्रभाव उत्पन्न करते हैं–जो मनोविज्ञान के अध्येता प्रतीकों को सुलझाकर उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। सभी लोक कथाओं में प्रतीक और अवचेतन मानसिक स्थितियों का चित्रण नहीं होता। ऐसी अनेक कथायें सांसारिक एवं सामाजिक जीवन की अंतरंग विवशताओं और आन्तरिक द्वंदों को भी व्यक्त करती हैं। इन कथाओं के पात्र और उनके क्रिया–कलाप अत्यंत सांकेतिक रूप से जीवन की विषमता से उत्पन्न मार्मिक स्थितियों पर आघात करते हैं और एक मानववादी स्थापना के द्वारा तुष्टि प्राप्त करते हैं। लौकिक एवं अलौकिक तत्वों से आभूषित कथायें जीवन के स्थूल व्यवहार और मानस की स्वछंद अथवा स्वप्नवत उर्मियों के साथ खेलती हुई प्रतीत होती है।

8. बातां री फुलवाड़ी! भाग––9

राजस्थान की परम्परागत लोक कथाओं की श्रंखला में विजयदांन देथा की बातां री फुलवाड़ी भाग–9 भी बड़ी ही प्रसिद्ध है।

इस भाग में देथा जी ने इक्कीस लोक कथाओं को लिखा है। जिनमें से उनकी नाहरसिंह, बछराजसिंह, विस्वास री बात, साता ने गटकाय जावूं, गुटियों राजा, ठाकर रौ भूत और कान्ह गुवाल आदि लोक कथाएं काफी चर्चित रही है। विजयदांन देथा और उसके बेटे कैलाश कबीर ने 'ठाकर रो भूत और 'साता ने गठकाय जावूं' नामक लोक कथाओं को (चौधराइन की चतुराई) कहानी संग्रह तथा 'विस्वास री बात', "गुटियों राजा' और 'कान्ह गुवाल' आदि को (उजाले के मुसाहिब) नामक कहानी संग्रह में इनका हिन्दी रूपान्तरण भी किया हैद्य 'ठाकुर का भूत' कहानी में सामन्ती व्यवस्था का उन्मूलन हुआ है, पर सामन्ती–संस्कार जन–मानस में अब भी अपनी गहरी जड़ें जमाये हुए है। और जनतनत्र में स्वच्छन्दता मिलने पर वे अधिक प्रचण्ड हुए हैं। जब तक ठाकुर जीवित था उसने अपनी प्रभुता के जोर पर किसानों का शोषण करने में कोई कसर नहीं रखी। रखता भी क्यों ? अधिकार मिलने पर हर व्यक्ति उनका सदुपयोग करने की बजाय दुरूपयोग ही करता है। पर ठाकुर तो मृत्यु के उपरान्त भी अपनी दुष्प्रवति न छोड़ पाने के लिए मजबूर था। जब गांव–चौधरी बरसात के पहिले अपने खेत में सूड़–सबाड़ करने के लिए गया तो उसे खेजड़ी के पास एक सफंद आकृति दिखाई देती है। वार्तालाप के दौरान पता चलता है कि ठाकुर का भूत अपने करतबों का प्रायश्चित करने के लिए कृत–संकल्प है। बिना मेहनत किये ही वह गांव–चौधरी के घर पहिले की तुलना में दुगुनी, तिगुनी या? चौगुनी फसल पहुंचा कर अपने अत्याचारों का खामियाजा भरने की मंशा से स्वर्ग का मोह भी छोड़ने को तैयार है। पर गांव–चौधरी बिना मेहनत के कुछ भी प्राप्त करने के लिए रजामन्द नहीं होता, पर

भूत के डर से उसका तनिक भी वश नहीं चलता। अपनी मेहनत के अलावा हराम के बेशुमार मोती भी मिलें तो उसे स्वीकार नहीं। हराम का माल उसे हजम ही नहीं होता। मगर ठाकुर का भूत उसे खेती के निमित्त कुछ भी काम नहीं करने देता। अन्त में जो नतीजा होना था, वही हुआ। गांव–चौधरी का खेत गंज की तरह कोरा ही रह जाता है। विश्वास की बात एक प्राचीन लोक कथा है जिसमें एक चौधरी किसी बनिये का सताया हुआ प्रदेश में नौकरी करने के लिए जाता है। रास्ते में उसे एक बावड़ी मिलती है जिसमें सात भूत रहते हैं। भूतों ने चोधरी को एक चांदी की कडाही, सोने की मैंगनी करने की बकरी व छैनी हथौड़ा दिये हैं। लेकिन चालाक बनिया चौधरी से उन्हें प्राप्त कर लेता है। जब बनिये की चालाकी का पता चलता है तो उसकी धुनाई होती है। इस प्रकार यह लोककथा गरीब चौधरी के शोषण से सम्बन्धित है । इस प्रकार इस भाग में कई ऐसी लोक कथाएं हैं जो राजा, ठाक्र, बोहरे व पण्डों के जुल्मों के प्रतिरोध से सम्बन्धित है।

9. बातां री फुलवाड़ी भाग–10....

साहित्य अकादमी द्वारा पुरूस्कृत कथा संग्रह बातां री फुलवाड़ी 10 राजस्थानी लोक कथाओं का पुनसर्जन है। इस भाग का राजस्थानी भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद करने वाले कैलाश कबीर है, जो विजयदांन देथा के पुत्र है। इस भाग में बीस लोक कथाएं हैं ।

***व्याख्याता– हिन्दी**
स्वामी विवेकानन्द राजकीय महाविद्यालय,
खेतड़ी